# रेल कुटुम्ब

क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान , उत्तर रेलवे , चंदौसी की मासिक ई - पत्रिका

व र्ष - 1 अं क -

अ क्टू ब र - 2 0 1 8

प्रिय प्रशिक्षणार्थियो एवं संस्थानकर्मियो ,

यह माह बहुत महत्वपूर्ण पर्वो से परिपूर्ण रहा । इसी माह में गणपति महोत्सव आया और संस्थान में इसे श्रद्धापूर्वक मनाया गया। गणेश चतुर्थी से लेकर प्रतिमा विसर्जन तक पूरे श्रद्धा भाव से सभी ने सम्यक भागीदारी की।

हिंदी दिवस पर 'राजभाषा पखवाड़ा' का भी शुभारम्भ किया गया जिसमें प्रतियोगिताओं के माध्यम से भाषा और अपनी भाषा के मान-महत्व पर व्यापक सामूहिक चिंतन - मनन हुआ।

इसके साथ ही स्वच्छता के राष्ट्रीय अभियान और विश्वकर्मा जयंती पर औजार पूजन में सभी ने सक्रिय सहभागिता की।

पांच सितम्बर (शिक्षक दिवस) पर संस्थान के शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

आश्वस्त रहें कि भविष्य में भी प्रशिक्षण कार्यक्रम इसी प्रकार सरस बना रहेगा ।

आप सभी को मेरी शुभकामनायें !!

- पुष्प राज

आई आर टी एस

प्रधानाचार्य

## अनुक्रमणिका -


| | |
|---|---|
| ग़ज़ल - फिरोज़ अहमद | 2 |
| मेरा संस्थान - मुकेश कुमार सिंह | 3 |
| खेल -खेल में खेल - नंदलाल प्रसाद | 4-6 |
| जिंदगी और रेल - रोहित चौड़ाकोटी | 7 |
| कामयाबी - अश्वनी | 8 |
| सपना- आशुतोष कुमार विश्वकर्मा | 9 |
| यादें - संजीव कुमार | 10 |
| ROAD TO SUCCESS - A K Singh | 11 |
| स्वच्छता अभियान और पौधारोपण | 12 |
| हिंदी दिवस - ईसम पाल सिंह | 13 |

# गज़ल

- फिरोज़ अहमद

अपना अपना वज़ूद है
अपने अपने घरानों में

अपने ही लोग शामिल हैं
अपना ही घर जलाने में

कागज़ भी बदल गया है
पन्नियों का रूप लेकर
बारिशों में उड़ते देखा है
पतंग को इस जमाने में

वो अपने किस्मत को
रोज बदलता रहता है
कुछ भी मुश्किल नहीं रहा
अब तो इस जमाने में

ये राह इतनी आसां नहीं
संभल संभल कर चलिये

जो गिर गया इस राह में
उसे वक़्त लगा है उठ पाने में

. टी आई -1 इलाहाबाद मंडल


## सम्पादक मंडल

संरक्षक - श्री पुष्प राज सिंह ,
प्रधानाचार्य (आई आर टी एस)

प्रधान सम्पादक - सुश्री अंजू सिंह
उप प्रधानाचार्य (आई आर टी एस)

| | | | |
|---|---|---|---|
| सम्पादक | - | संजय कुमार शुक्ला | वरिष्ठ अनुवादक |
| उप सम्पादक | - | हरमीत सिंह | सांस्कृतिक सचिव |
| | | मुनेश बाबू | छात्रावास अधीक्षक |
| | | रनवीर सिंह | मुख्य कार्यालय अधीक्षक |

# मेरा क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान

- मुकेश कुमार सिंह

सुन्दर मान सरोवर में है, जैसे एक कमल का फूल।
सबसे अच्छा मेरा है, चन्दौसी का क्षेत्रीय रेलवे ट्रेनिंग स्कूल।।

मुख नहीं मोड़ा करते, शिक्षक कभी पढ़ाई से ।
राह दिखाया करते हैं, सादगी और सच्चाई से ।।

समय पालन, संरक्षा, सुरक्षा का पाठ हमें पढ़ाते हैं।
रेल की छवि बनाये रखना,प्रेम सहित समझाते हैं।।

रंग–बिरंगे परिधान पहने, प्रशिक्षणार्थी लगते हैं इसके फूल।
सबसे अच्छा मेरा है, चन्दौसी का क्षेत्रीय रेलवे ट्रेनिंग स्कूल।।

सोने के अंगूठी में एक, हीरे का नग होता है।
गुरूजनों के मध्य में प्राचार्य शोभित, प्रेम की बहती गंगा हैं।।

सदा रहें हम गुरूजनों और माता–पिता के अनुकूल।सबसे अच्छा मेरा है, चन्दौसी का क्षेत्रीय रेलवे ट्रेनिंग स्कूल।।

सुन्दर मान सरोवर में है, जैसे एक कमल का फूल।सबसे अच्छा मेरा है, चन्दौसी का क्षेत्रीय रेलवे ट्रेनिंग स्कूल।।

---

.प्रोमो0 वाणिज्य लिपिक कोर्स : सी.पी.–2

**कुराला, फिरोजपुर मंडल**

**संरक्षा नाटिका** **खेल–खेल में रेल**

- नन्दलाल प्रसाद

(अनुदेशक क्लास में आते हुये दिखायी पड़ते है। प्रशिक्षणार्थी आपस में खुसर–फुसर करते हुये ! यादव सर आ रहे हैं।)
अनुदेशक क्लास में प्रवेश करते हैं। सभी प्रशिक्षणार्थी एक साथ : नमस्ते सर ।
अनुदेशक प्रशिक्षणार्थियों से : नमस्ते भाई नमस्ते। बैठो –2 और सुनाओ। हाल–चाल।नाश्ता पानी किये हो ना ।
प्रशिक्षणार्थी : बहुत बढ़िया, सर। मजा आ गया।
अनुदेशक हाजिरी लगाते हुये :– अच्छा भाई हाजिरी बोलो। (नाम बोलते हुये) नन्दू भाई।
नन्दू : नींद आ रही है सर।
अनुदेशक : हाजिरी बोलो नन्दू हाजिरी।
नन्दू : सर हाजिरी ही तो बोल रहा हूॅ सर।
अनुदेशक : ठीक है, ठीक है बैठ जाओ।
नन्दू : मै तो बैठा ही हूॅ सर।
अनुदेशक : ठीक है, ठीक है। अनोखे लाल।
नन्दू : अनोखे लाल आज नहीं बोलेगा सर।
अनुदेशक : काहे भाई ?
नन्दू : क्योंकि अनोखे लाल अभी खा रहा है सर।
अनुदेशक : क्या मतलब? उसे नाश्ता नहीं मिला क्या?
नन्दू : सर, नाश्ता तो मिला रहा, लेकिन उ भुक्खड़ है न ! घर से चल कर 3 दिन में पहुंचा है आज न । गाड़ी में बाढ़ से खाना नहीं खाया था, इसलिये ।
अनुदेशक : ठीक है चुप रहो नन्दू , बहुत बोलते हो।
नन्दू : नहीं सर, मैं तो बहुत कम बोलता हूॅ, पूंछ लीजिये भोला से।
अनुदेशक : अच्छा–2 ठीक है।
भोला : हाजिर सर ।
हजारी : हाजिर सर।
फूलचन्द : हाजिर सर ।
राम भरोसे : उपस्थित सर।
अनुदेशक : हॉ भाई नन्दू , शुरू करे पढ़ाई। बेटा बहुत दिन से तू कुछ भी नहीं बता रहा है। चल खड़ा हो जा।
नन्दू : जी सर, आज तैयारी करके आया हूॅ ।
अनुदेशक : ठीक है तो ये बता, गाड़ी कैसे चलायेगा।

चलाना दिखाते हुये।)
अनुदेशक : अबे ! तूझे कल जो बताया था वो बता।
नन्दू (सिर खुजाते हुये) : सर वो, वो जो कल आपने बताया था वो। सर आपने तो बताया था कि पहले सिगनल झुकायेंगें। इसके बाद ताला लगायेंगें। इसके बाद लाइन बनायेगें। फिर लाइन क्लियर लेगें।
अनुदेशक : गधा कहीं का! चुप हो जा । अनोखे लाल तू बता । ये तो पक्का फेल होगा। कुछ नहीं आता इसे।
अनोखे लाल : सर, पहले लाइन क्लियर लूगां। इसके बाद लाइन बनाउंगां। इसके बाद कॉटे पर ताला लगाउंगां। फिर सिगनल डाउन करूंगां। फिर ड्राइबर गाड़ी चलायेगा।
अनुदेशक : बहुत अच्छा ! (नन्दू के तरफ देखते हुये) तू भी कुछ इससे सीख नन्दू। अच्छा अनोखे और बता, कुछ और रह गया ।
अनोखे लाल : और क्या रह गया – 2, और क्या रह गया – 2 ।
भोला (हाथ उठाते हुये ) : मै बताऊ सर ।
अनुदेशक : अच्छा ! तू ही बता दे ।
भोला : काशन आर्डर देंगें, सर ।
अनुदेशक : अच्छा ! ये बता उस सेक्शन में जब काशन नहीं होगा, तब भी तू काशन देगा ।
भोला : काशन आर्डर नहीं देंगें, सर । नहीं, नहीं देगें सर, देगे सर ।
अनुदेशक : अच्छा फूलचन्द चल तू बता।
फूलचन्द : सर, निल काशन आर्डर टी.ए./409 देगें ।
अनुदेशक : शाबाश ! ये हुई न बात । सीखो नन्दू सीखो।
नन्दू : फूलचन्द ने गलत जबाब दिया तो उसे आप शाबाशी दे रहे है जबकि इसका उत्तर टी–409 है।
अनुदेशक : नन्दू चुप रहो, फूलचन्द ने सही जबाब दिया है और ध्यान से सुनो ।जब सेक्शन में काशन होगा तब टी–409 दिया जायेगा और जब काशन नहीं होगा तब टी.ए./409 दिया जायेगा।
नन्दू : ठीक है सर।
अनुदेशक राम भरोसे से : राम भरोसे, तू बता, जब गाड़ी बिना टेल लैम्प के आयेगी तो तू कया करेगा।
रामभरोसेःसाहेब,जब गाड़ी बिना टेल लैम्प के आयेगी न,तब हम लालटेन टॉग देगें।
अनुदेशक (हॅसते हुये) : अच्छा ये बता, तू लालटेन लायेगा कहां से ।
राम भरोसेःसाहेब, छेदीलाल की दुकान से खरीद कर लायेंगें और टांग देगें और क्या?
अनुदेशकःराम भरोसे,जैसा तेरा नाम, वैसा तेरा काम। तू है ही राम भरोसे। अच्छा, हजारी तू बता।
हजारी : हमसे पूछ रहे है, सर।

और क्या?
अनुदेशकःराम भरोसे, जैसा तेरा नाम,वैसा तेरा काम। तू है ही राम भरोसे। अच्छा, हजारी तू बता।
हजारीःहमसे पूछ रहे है, सर। अनुदेशकःहॉ भाई, बताओ ।
हजारीःसर, जब गाड़ी बिना टेल लैम्प के आयेगी तब पहला काम ! ये करूगा कि गाड़ी की बैक रिपोर्ट नहीं दूंगा। दूसरा काम!पहले गार्ड से गाड़ी का कम्प्लीट मंगाउंगा टी–1410 पर। कम्प्लीट मिलने के बाद ही बैक रिपोर्ट दूंगा।
अनुदेशकःहूँ ! ठीक राम भरोसे ! सुना तुमने, ध्यान से पढ़ो।
अनुदेशकः अच्छा, ये बताओ एफ. एम के बारे में जानते हो
सभी प्रशिक्षणार्थी एक साथःनहीं सर।(सर आप पढ़ाते कम हैं और पूछते बहुत हैं।)
अनुदेशक : क्या बात करते हो नन्दू, इन्स्ट्रक्टर का मजाक उड़ाते हो ।
नन्दू : नहीं, सर, सारी सर ।
अनुदेशक : ठीक है ठीक है।
नन्दू : सर, मैं बताऊ, सर।
अनुदेशक : अच्छा बताओ।
नन्दू :सर, वहीं एफ0एम0 रेडियो न,जिस पर फिल्मी गाना आता है, उसी की बात कर रहे हैं न आप।
अनुदेशक :अरे बेवकूफ ! मैं रेडियो वाला एफ0एम0 की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं रेल वाला एफ0एम0 की बात कर रहा हूँ । समझे ।
नन्दू : जी सर– जी सर ।
अनुदेशकः सुनो ! ये दो रेलवे की लाइनें है। इन दोनों लाइनों के बीच लगातार 15.5 फीट का अन्तर रहना चाहिये। लेकिन जब कहीं भी ये लाइनें एक दूसरे से मिलती हैं या क्रास करती हैं तब दोनों लाइनों के बीच की यह स्टैडर्ड (मानक) दूरी कम हो जाती है। जहॉ से यह मानक दूरी कम होनी शुरू होती है वहीं पर एक सफेद रंग से पुता हुआ पत्थर लगा देते हैं, यही चिन्ह एफ0एम0 कहलाता है। इस पर काले पेंट से अंग्रेजी का अक्षर थ्ड अर्थात फाऊलिंग मार्क लिख दिया जाता है। शंटिंग के दौरान थ्ड को हमेशा साफ रखना चाहिये। और गाड़ी के गार्ड को हमेशा अपनी गाड़ी थ्ड साफ करके खड़ी करवानी चाहिये। यदि थ्ड साफ नहीं है तो गार्ड, स्टेशन मास्टर या केबिनमैन की तरफ लगातार लाल सिगनल दिखायेगा। तथा उस लाइन पर किसी भी मूवमेण्ट को होने नहीं देगा जब तक कि उसकी गाड़ी से फाउलिंग मार्क साफ न हो जाय, अन्यथा फाउलिंग मार्क साफ न होने पर साइड कोलीजन का खतरा बना रहता है। समझ गये न।
सभी ट्रेनीज एक साथ : जी सर। समझ गये।
अनुदेशक : ठीक है समझ में आ गया तो अच्छी बात है। कल पूछता हूँ । और अनुदेशक जाने लगता है।
तभी पीछे से नन्दू आवाज देते हुये : जा रहे हैं, सर । हैपी टीचर्स डे सर ।
सभी ट्रेनीज एक साथ : " हैपी टीचर्स डे " सर ।

( मुख्य वाणिज्य अनुदेशक, क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, उत्तर रेलवे चंदौसी )

# ज़िंदगी और रेल

- रोहित चौड़ाकोटी

यहाँ हंसने और रोने दोनों की वज़ह है
ये ज़िंदगी भी एक रेल की तरह है

यहाँ कुछ सुकून भी है कुछ शोर भी है
कभी नॉर्मल डे है तो कभी फेल्योर भी है

सुख और दुख सिगनलों की बत्ती जैसे जीवन के भी रंग हैं
लाल हो या हरी हो या हो पीला, रहते सब संग हैं

एक छुट्टी मिले एक टूर बने सबका ये अरमान है
गाडी राइट टाइम चलाओ कंट्रोलर का फरमान है

ज़िंदगी या रेल मुश्किलें दोनों में आतीं हैं

घबरा मत और आगे बढ़ - दोनों हमें बताती हैं
लंबा है सफर ढूंढो तो खुशियाँ मिल ही जाती हैं

.....

टी-1 अनु. 61 लखनऊ मंडल

# कामयाबी

. अश्वनी मिश्र

राह में पड़ी कहीं ये मिलती नहीं है
प्रयास कम कर देने से दूरी बढ़ती ही है
कामयाबी मिलती है परिश्रम और नियंत्रण से
सिक्कों से ये खरीदी नहीं जा सकती नहीं है।

तय करके लक्ष्य हम जुटे फिर दृढता से
प्रतिकूलता में इरादा न डगमगाये हमारा
कमियों को अपनी स्वयं ही ढूंढकर
उन पर विजय का हो प्रयास हमारा

कामयाबी मिलती है अपने पर नियंत्रण रखने से
लेकिन यह होता नहीं है आसानी से

रोकने का जो प्रयास हो समाज से
उलझ कर उसमें न बर्बाद हो समय हमारा
थकान हावी न हो पाये ऊपर हमारे
विपत्तियों में भी न दिगे प्रयास हमारा

कामयाबी मिलती है दिन रात एक कर देने से
लेकिन यह होता नहीं है आसानी से

पग चलते रहें मग पर
किंचित न मौका बने अलावा
अपने बचाव में न लगकर करें सुधार
लक्ष्य प्राप्ति में साधन भी शुभ हो हमारा

कामयाबी मिलती है कामयाब लोगों के अनुसरण से भी
संगत में लेकिन यह होता नहीं आसानी से

# सपना

- आशुतोष कुमार विश्वकर्मा

है अगर खामोश जुबाँ तो दिल में ये शोर क्यों है
ले के आँखों में आंसू नाचता मोर क्यों है

आया है इंसान मेहमान बनकर इस धरा पर
तो वह फैला रहा स्वार्थ का कारोबार क्यों है
नहीं पाया समझ मानव आज भी खुदा के इंसाफ को
उसकी लाठी कहीं नर्म कहीं कठोर क्यों है
वक्त है लौट चलो वापस नहीं हो दूर सच से
बहुत दूर निकल समझोगे झूठ का जंगल घनघोर क्यों है

जिस दिन समझ जाओगे सच्चे मुहब्बत की दास्तां
उस दिन जानोगे कृष्ण के लिये राधा की आंखें सराबोर क्यों है

चाहते हैं सभी रिश्तों को संभालना पर डर है झूठे अहम् का
नहीं समझ आता मुझे लोगों में पहले न कदम उठाने की होड़ क्यों है

-प्रशिक्षु सहा. स्टेशन मास्टर टी.आई.-1 अनु. 485

# यादें

- संजीव कुमार

सुंदर होती हैं वो यादें जिनसे मुख पर मुस्कान आती है
यादों के फूल
जब दिल रूपी इस विशाल बगीचे में खिलते हैं
यादें होती हैं रुलाने के लिये
यादें होती हैं बिछड़ों का एहसास दिलाने के लिये
शाम को बैठकर छत पर
याद तेरी आती है
जागता हूँ रात के सन्नाटे में
दिन का उजाला चुभता है
यादें होती हैं गहरी नदी में उठी भंवर की तरह
यादें होती हैं जानलेवा खुशबू की तरह
खोलता हूँ जब यादों का पिटारा
हजारों तस्वीरें नज़र आतीं हैं
देखूँ तो आँखें दुखती हैं
जैसे अधमुरझी कोपल से ढलती रात ओस झरती है
यादें होती हैं प्राणों की प्यासी
जिसकी प्रवृत्ति है सबसे न्यारी
यादें होती हैं मीठे जहर की तरह
जिसकी चुभन सुख भी है और दुख भी
किंतु यादें तो बस यादें होती हैं
जिनमें अतीत का वर्चस्व है
यादें हैं जो न दिखती हैं
और न मिटती हैं
बस एहसास दिलाती रहतीं हैं
गूंगे सम्बंधों की तरह ..... यादें .. यादें... यादें !

- प्रशिक्षु सहा.स्टेशन मास्टर टी.आई - 1

## THE ROAD TO SUCCESS

- ANIL KUMAR SINGH

The road to success is not straight ,
There is a curve called failure ,
A Loop called Confusion ,
Speed Bumps called Friends,
Red light called enemies,
A Caution light called Family ,
You will have flats called jobs,
Only if you have a sphere called determination,
An engine called pursuance,
An Insurance called Faith
And a driver called GOD
You will make it a place called Success .

---

- TRANSPORTATION INSTRUCTOR ,
ZRTI / CH

## संस्थान में स्वच्छता अभियान और पौधारोपण

संस्थान में बड़े स्तर पर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। यह संस्थान 83 एकड़ के विस्तृत भूभाग में है एवं पर्यावरण को शुद्ध रखने और हरीतिमा बनाये रखने के लिये अनुदेशकों एवं प्रशिक्षणार्थियों ने निरंतर श्रमदान किया और यह निरंतर जारी रखा जायेगा।

कविता हिंदी दिवस

.. ईसम पाल सिंह

लिखना यहाँ पढना यहाँ आया है दोस्तो
हिंदी का प्यार दिल पे मेरे छाया है दोस्तो
हिंदी है राजभाषा सत्कार करूँगा
जीना हो या मरना इसे प्यार करूँगा
भारत वतन अपना चमन पाया है दोस्तो
हिंदी का प्यार दिल पे मेरे छाया है दोस्तो

हिंदी ही मेरा सपना हिंदी मेरा दीदार
हिंदी ही मेरी पूजा हिंदी ही मेरा प्यार
हिंदी ने हिंदुस्तान महकाया है दोस्तो
हिंदी का प्यार दिल पे मेरे छाया है दोस्तो

हिंदी रहेगी दिल में तो हिंदुस्तान रहेगा
भारत रत्न का हमको अभिमान रहेगा
हिंदी दिवस मिलकर के मनाया है दोस्तो
हिंदी का प्यार दिल पे मेरे छाया है दोस्तो

शहीदों ने हमारे लिये क्या कुछ नहीं किया
सौ बार शुक्रिया अरे सौ बार शुक्रिया
तूफानों से हिंदी को निकाला है दोस्तो
हिंदी का प्यार दिल पे मेरे छाया है दोस्तो

.. प्रशिक्षु एम-पी- 3 लोको पायलट
मेरठ नगर . दिल्ली मंडल